संविधान निर्माण

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» संविधान निर्माण: पृष्ठभूमि और उद्देश्य

प्रश्न 1 (आसान). आज़ादी के बाद संविधान बनाने की पृष्ठभूमि क्या थी?
उत्तर – स्वतंत्र भारत में शासन-व्यवस्था को नए तरीके से गढ़ना–क्योंकि पहले व्यवस्था अलग थी।

प्रश्न 2 (आसान). संविधान का एक मुख्य उद्देश्य लिखो।
उत्तर – लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करना।

प्रश्न 3 (मध्यम). संविधान नागरिकों के लिए 'आधार' कैसे तय करता है?
उत्तर – नागरिकों के अधिकार और उनके सुरक्षित रहने का ढांचा स्पष्ट करके।

प्रश्न 4 (कठिन). मान लो सरकार के फैसले बिना नियमों के होते हैं। संविधान निर्माण का उद्देश्य उस स्थिति में कैसे स्पष्ट होता है?
उत्तर – संविधान शासन के लिए नियम तय करता है ताकि मनमानी न हो, लोकतंत्र चले और नागरिकों के अधिकार सुरक्षित रहें।

» संविधान सभा की भूमिका और कार्य-प्रक्रिया

प्रश्न 5 (आसान). संविधान सभा का काम मुख्यतः कितने चरणों में समझाया जाता है?
उत्तर – तीन चरणों में: विचार-विमर्श, निर्णय-निर्माण, और संविधान को अंतिम रूप देना।

प्रश्न 6 (आसान). निर्णय-निर्माण का मतलब क्या है?
उत्तर – विचारों/बहस के बाद यह तय करना कि क्या संविधान में और किस रूप में लिखा जाएगा।

प्रश्न 7 (मध्यम). "संविधान सामूहिक विचार का परिणाम है" इस बात को संविधान सभा की प्रक्रिया से कैसे समझोगे?
उत्तर – क्योंकि संविधान सभा में चर्चा होती है, फिर प्रस्तावों पर निर्णय लिए जाते हैं, और अंत में अंतिम रूप दिया जाता है–यानी एक व्यक्ति की इच्छा नहीं, सदस्य मिलकर संविधान बनाते हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). अगर कोई सदस्य किसी अधिकार-प्रावधान से सहमत नहीं है, तो संविधान सभा की प्रक्रिया में आगे क्या होना चाहिए–केवल बात या निर्णय भी?
उत्तर – केवल बात नहीं–विचार-विमर्श में उसका पक्ष आएगा, फिर बहस होगी, और अंततः निर्णय-निर्माण चरण में यह तय होगा कि प्रावधान संविधान में किस रूप में शामिल होगा; फिर अंतिम रूप देने में संशोधन/समावेश होगा।

» संविधान का स्वरूप: लोकतंत्र, समानता और न्याय का आधार

प्रश्न 9 (आसान). लोकतंत्र का मतलब संविधान के मूल्यों में क्या समझा जाता है?
उत्तर – शासन जनता/प्रतिनिधियों के जरिए चले, मनमानी न हो।

प्रश्न 10 (आसान). समानता संविधान के हिसाब से किस बात पर जोर देती है?
उत्तर – अधिकार और कानून सबके लिए बराबर लागू हों।

प्रश्न 11 (मध्यम). न्याय क्यों जरूरी है? एक लाइन में बताओ।
उत्तर – अधिकारों के उल्लंघन पर नियम के अनुसार इंसाफ/सुनवाई मिल सके।

प्रश्न 12 (कठिन). अगर किसी विद्यालय में अनुशासन के फैसले सिर्फ ताकत/पहुंच के आधार पर हों, तो कौन-से संविधान मूल्य प्रभावित होंगे और कैसे?
उत्तर – समानता प्रभावित होगी क्योंकि नियम बराबर नहीं लागू होते, और न्याय प्रभावित होगा क्योंकि सही सुनवाई/नियम-आधारित फैसले नहीं होते।

» नागरिक अधिकार और उनकी महत्ता

प्रश्न 13 (आसान). नागरिक अधिकार लोकतंत्र को कैसे सार्थक बनाते हैं?
उत्तर – वे शासन को मनमानी से रोकते हैं और नागरिकों का संरक्षण करते हैं।

प्रश्न 14 (आसान). नागरिक अधिकारों का एक काम बताइए।
उत्तर – सरकार/शासन पर नियंत्रण करके गलत कामों को रोकना।

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर स्कूल में किसी बच्चे के साथ भेदभाव हो रहा हो, तो नागरिक अधिकारों की भूमिका क्या होगी?
उत्तर – बच्चे को संरक्षण मिलेगा, समान अवसर सुनिश्चित कराने और इंसाफ के लिए आवाज/प्रक्रिया मदद करेगी।

प्रश्न 16 (कठिन). 'अधिकार सिर्फ सरकार से माँग' नहीं हैं–इस बात को लोकतंत्र के संदर्भ में समझाइए।
उत्तर – अधिकार शासन के लिए सीमाएँ तय करते हैं, जवाबदेही बढ़ाते हैं और गलत निर्णयों पर कानूनी/न्यायिक प्रक्रिया द्वारा नियंत्रण सुनिश्चित करते हैं–इसलिए अधिकार शासन को रोकने का भी काम करते हैं।

» राज्य के नीति-सिद्धांत (Directive Principles): लक्ष्य और दिशा

प्रश्न 17 (आसान). नीति-सिद्धांतों का मुख्य लक्ष्य क्या है?
उत्तर – समाज में न्याय, कल्याण और विकास सुनिश्चित करना।

प्रश्न 18 (आसान). क्या नीति-सिद्धांत सीधे-सीधे नागरिकों के 'अधिकार' होते हैं?
उत्तर – नहीं, ये सीधे अधिकार नहीं होते।

प्रश्न 19 (मध्यम). नीति-सिद्धांत अधिकार नहीं होते फिर भी शासन पर कैसे असर डालते हैं?
उत्तर – ये सरकार को नीति बनाने और काम करने की दिशा देते हैं, इसलिए शासन को मार्गदर्शन मिलता है।

प्रश्न 20 (कठिन). अगर नागरिक कहे कि 'नीति-सिद्धांत के आधार पर मुझे तुरंत कानूनी सुविधा मिलनी चाहिए', तो आप उसे संविधान के अनुसार सही बात कैसे समझाएँगे?
उत्तर – समझाएँगे कि नीति-सिद्धांत सीधे अधिकार नहीं हैं; इसलिए हर मांग को तुरंत अदालत में लागू करवाना संभव नहीं। लेकिन सरकार को न्याय-कल्याण-विकास की दिशा में नीतियाँ बनानी चाहिए, और नीति-सिद्धांत उसका मार्गदर्शन करते हैं।

» संविधान की विशिष्ट विशेषताएँ और उसका प्रभाव

प्रश्न 21 (आसान). संविधान की 'लोकतांत्रिक मूल्य' वाली विशेषता का सीधा प्रभाव शासन में कैसे दिखता है?
उत्तर – सरकार को जवाबदेह और सीमाओं में काम करना पड़ता है, सत्ता जनता से जुड़ी रहती है।

प्रश्न 22 (आसान). 'समावेशी दृष्टि' का मतलब क्या है?
उत्तर – देश को चलाने की सोच ऐसी हो कि अलग-अलग वर्ग/कमज़ोर तबकों को भी अवसर और सुरक्षा मिले।

प्रश्न 23 (मध्यम). अगर संविधान में संस्थागत व्यवस्था मजबूत हो, तो शासन पर इसका क्या असर पड़ता है?
उत्तर – भूमिकाएँ स्पष्ट होती हैं, नियंत्रण/संतुलन काम करता है और मनमानी घटती है।

प्रश्न 24 (कठिन). किसी नीति का 'प्रभाव' मजबूत होने के लिए सिर्फ लक्ष्य लिखना पर्याप्त क्यों नहीं होता? संविधान की तीन विशेषताएँ–लोकतंत्र, समावेश, संस्थान–को जोड़कर समझाओ।
उत्तर – लक्ष्य (जैसे न्याय/कल्याण) तभी असर बनते हैं जब लोकतांत्रिक जवाबदेही से क्रियान्वयन पारदर्शी हो, समावेशी दृष्टि से वंचित तक पहुँच बने, और संस्थागत व्यवस्था से जिम्मेदार संस्थाएँ/बजट/निगरानी व नियंत्रण हों।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो आज़ादी के बाद भारत में शासन किसी एक व्यक्ति के फैसले से चलने लगे। बताओ, संविधान के "उद्देश्य" के हिसाब से इसमें कौन-सी समस्या होगी?

› सोचो: संविधान का उद्देश्य मनमानी रोककर लोकतांत्रिक व्यवस्था बनाना है

› यदि एक व्यक्ति के फैसले से शासन चले, तो लोगों की भागीदारी/चुनाव का महत्व कम हो जाएगा

› फिर नागरिकों के अधिकारों के लिए स्पष्ट आधार कमजोर पड़ जाएगा

› इसलिए शासन के नियम लोकतांत्रिक तरीके से संविधान में तय किए जाते हैं

उत्तर – यदि शासन एक व्यक्ति के फैसले से चले, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था कमजोर होगी और नागरिकों के अधिकार/आधार स्पष्ट रूप से सुरक्षित नहीं रहेंगे–इसीलिए संविधान बनाकर शासन के नियम तय किए गए।

उदाहरण 2. मान लो संविधान सभा में 'नागरिकों के अधिकार' पर प्रावधान का मसौदा आया। इस विषय में संविधान सभा की कार्य-प्रक्रिया को तीन चरणों में लिखो: विचार-विमर्श, निर्णय-निर्माण, और संविधान को अंतिम रूप देना।

› विचार-विमर्श: सदस्य चर्चा करते हैं कि कौन-कौन से अधिकार जरूरी हैं और क्यों।

› निर्णय-निर्माण: प्रस्ताव पर बहस के बाद तय किया जाता है कि किस अधिकार को संविधान में और किस तरह से लिखा जाएगा।

› अंतिम रूप देना: मसौदे में संशोधन करके पूरे संविधान के रूप में अंतिम प्रावधान को शामिल किया जाता है।

उत्तर – विचार-विमर्श अधिकारों की जरूरत और कारणों पर चर्चा; निर्णय-निर्माण बहस के बाद प्रावधान तय; अंतिम रूप देना मसौदे/संशोधनों के बाद अंतिम संविधान में अधिकारों को शामिल करना।

उदाहरण 3. एक गांव में बिजली बिल भरने के नियम हैं। कुछ लोग कहते हैं–"हमारी पहुंच है, हम पर देर से जुर्माना नहीं लगेगा।" बाकी लोगों पर जुर्माना लग जाता है। संविधान के मूल्यों के हिसाब से बताओ इस बात में कौन-सा मूल्य कमजोर पड़ता है और क्यों?

› पहले देखो निर्णय का आधार क्या है–क्या यह "नियम सबके लिए" है या "पहुंच वालों के लिए अलग"?

› अगर पहुंच वाले लोगों को अलग छूट दी जाए तो समानता का उल्लंघन होता है, क्योंकि कानून/नियम बराबर लागू नहीं हो रहे।

› यदि जुर्माना गलत तरीके से लगाया गया हो और सही तरीके से सुनवाई/अपील न हो तो न्याय कमजोर पड़ता है।

› लोकतंत्र का संबंध यहाँ इस बात से है कि नियम कैसे बनते और लागू होते हैं–यदि नियम लागू करने का तरीका पारदर्शी/प्रतिनिधि नियंत्रण में नहीं है तो भी समस्या बढ़ती है।

उत्तर – इस स्थिति में मुख्य रूप से समानता कमजोर पड़ती है, क्योंकि नियम बराबर लागू नहीं हो रहे। साथ ही न्याय कमजोर पड़ता है अगर गलत जुर्माने पर सुनवाई/अपील का भरोसेमंद रास्ता नहीं दिया जाए।

उदाहरण 4. मान लो एक छात्रा को उसकी पढ़ाई के लिए स्कूल जाने से मना कर दिया गया, और कहा गया कि "तुम्हें बोलने/अपनी बात रखने की ज़रूरत नहीं।" इस स्थिति में नागरिक अधिकार कैसे मदद करेंगे?

› पहले समझो: अधिकार सिर्फ सुविधा नहीं, सुरक्षा और नियंत्रण का काम करते हैं।

› भेदभाव/अन्याय हुआ है–तो नागरिक संरक्षण का अधिकार सक्रिय होता है।

› शिक्षा व समान अवसर के संदर्भ में नियम लागू कराने की मांग उठती है।

› अपनी बात रखने/आवाज़ उठाने का अधिकार–शिकायत/अपील में मदद करता है।

› अगर गलत हो रहा है तो न्याय/कानूनी प्रक्रिया के जरिए शासन पर नियंत्रण आता है।

उत्तर – इस स्थिति में छात्रा के नागरिक अधिकार उसे अन्याय/भेदभाव से सुरक्षा और अपनी बात रखने का रास्ता देते हैं; साथ ही गलत करने वालों को नियमों के दायरे में लाकर शासन पर नियंत्रण और इंसाफ की उम्मीद बनाते हैं।

उदाहरण 5. मान लो एक नागरिक कहता है: "नीति-सिद्धांत के अनुसार सरकार को तुरंत सबको मुफ्त स्वास्थ्य सेवा देनी चाहिए, नहीं तो मैं अदालत में इसे लागू करा दूँ।" बताइए–क्या यह संभव है, और नीति-सिद्धांत इस मामले में क्या भूमिका निभाते हैं?

› पहले फर्क याद करो: नीति-सिद्धांत सीधे अधिकार नहीं होते।

› इसलिए नागरिक हर नीति-सिद्धांत के आधार पर तुरंत अदालत से 'आदेश' जैसा लागू कराने का दावा नहीं कर सकता।

› फिर भी नीति-सिद्धांत सरकार को मार्गदर्शन देते हैं कि स्वास्थ्य जैसे क्षेत्र में न्याय-कल्याण-विकास की दिशा में नीति बनाए।

› सरकार योजना/कानून बनाते समय इन्हें ध्यान में रखकर कदम उठाती है।

उत्तर – अदालत में सीधे 'तुरंत लागू कराओ' वाला दावा सामान्यत: नीति-सिद्धांतों के आधार पर नहीं बनता, क्योंकि ये अधिकार नहीं हैं। लेकिन ये सरकार को स्वास्थ्य जैसी नीतियों में न्याय-कल्याण-विकास की दिशा तय करने में मार्गदर्शन देते हैं।

उदाहरण 6. किसी राज्य में शिक्षा-व्यवस्था सुधारने की नीति बनाई जाती है। राज्य सरकार कहती है कि "हम सभी को शिक्षा देना चाहते हैं," लेकिन बजट, नियम और निगरानी का ढांचा नहीं बनाती। संविधान की विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर बताओ–ऐसी स्थिति में शासन का प्रभाव क्यों कमजोर पड़ता है?

› लोकतांत्रिक मूल्य देखें: नीति बनाने में जनता/प्रतिनिधि की जवाबदेही और पारदर्शिता चाहिए; बिना ढाँचे के निगरानी नहीं होती।

› समावेशी दृष्टि देखें: "सभी" कहने से काम नहीं चलेगा; वंचित/कमज़ोर समूहों तक पहुँच सुनिश्चित करने के तरीके चाहिए।

› संस्थागत व्यवस्था देखें: बजट, समय-सीमा, जिम्मेदार संस्थाएँ, और नियंत्रण/जांच (checks) नहीं हैं तो नीति लागू ही नहीं टिकती।

› इसलिए प्रभाव कमजोर: लक्ष्य तो है, पर संस्थागत रास्ता और मूल्य-आधारित क्रियान्वयन नहीं।

उत्तर – शासन का प्रभाव कमजोर इसलिए पड़ता है क्योंकि संविधान की विशिष्ट विशेषताएँ (लोकतांत्रिक जवाबदेही, समावेशी पहुँच, और संस्थागत व्यवस्था/निगरानी) के बिना सिर्फ "इरादा" रहता है, लागू करने की व्यवस्था नहीं बनती।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- उत्तर लिखते समय "शासन के नियम, लोकतंत्र, नागरिकों का आधार" जरूर तीन बिंदु बनाकर लिखो।
- बोर्ड में 3 चरण लिखिए: विचार-विमर्श, निर्णय-निर्माण, अंतिम रूप।
- उत्तर में तीनों शब्द लिखो और हर एक के लिए 1-1 लाइन: शासन/बराबरी/इंसाफ।
- उत्तर लिखते समय: 'संरक्षण' + 'शासन पर नियंत्रण' दोनों ज़रूर लिखो।
- 5-मार्क के उत्तर में लिखो: 'लक्ष्य' + 'ये अधिकार नहीं' + 'सरकार को दिशा'।
- उत्तर लिखते समय 'तीन विशेषताएँ' अलग-अलग लिखो और हर एक का 'प्रभाव' शासन-व्यवहार में बताओ।

एक नज़र में रिवीज़न

› - पृष्ठभूमि: आज़ादी के बाद नई व्यवस्था | उद्देश्य: शासन + लोकतंत्र + नागरिक-आधार

› - चर्चा निर्णय अंतिम रूप (संविधान सभा)

› - लोकतंत्र: शासन जनता से; समानता: बराबर अधिकार; न्याय: इंसाफ

› अधिकार = रोकता भी है, बचाता भी है

› लक्ष्य: न्याय-कल्याण-विकास | दिशा: सरकार का मार्गदर्शन | अधिकार नहीं

› - लोकतंत्र + समावेश + संस्थान = संविधान का प्रभाव